वाराणसी मण्डल में 1857 की क्रान्ति का स्वरूप

श्वेता श्रीवास्तव
इतिहास विभाग,
गोविन्द बल्लभ पन्त स्नातकोत्तर महाविद्यालय
जौनपुर (उ0प्र0)

आधुनिक भारत के इतिहास में 1857 का विद्रोह एक युग स्तम्भ के रूप में हमारे सामने दृष्टिगत होता है। यह विद्रोह अन्तिम अवसर था जब मध्ययुगीन परम्पराओं, मल्यों एवं व्यवस्थाओं को पुर्नजीवित करने के लिये पुरानी परम्परा के आधार पर औपनिवेशिक सत्ता का विरोध किया गया। उस विद्रोह की असफलता के पश्चात् उन पुरातन दृष्टिकोण एवं आदर्शो को छोड़कर एक नवीन दृष्टिकोण को स्वीकार कर औपनिवेशिक शासन का विरोध आधुनिक रणनीति के आधार पर किया गया। 1857 के विद्रोह के प्रारम्भ एवं उसके स्वरूप को लेकर एक लम्बे समय से राष्ट्रीय स्तर पर एक व्यापक विचार विमर्श होता रहा है। राष्ट्रीय स्तर से इतर क्षेत्रीय स्तर पर इस विद्रोह के सम्बन्ध में शोध कार्य की प्रक्रिया विकसित होती जा रही है।

1857 के विद्रोह का मूल वह हिन्दी भाषा भाषी क्षेत्र रहा है जिसमें भारत का उत्तरी भाग मुख्य रूप से सक्रिय रहा और विरोध का सर्वाधिक तीव्र स्वर इसी क्षेत्र में प्रस्फुटित हुआ। 1857 के विद्रोह का एक प्रमुख केन्द्र बनारस मण्डल उभर कर हमारे सामने उपस्थित होता है। बनारस प्रान्त अवध क्षेत्र का सीमान्त प्रान्त रहा है। इसकी सीमा बिहार से सटे होने के कारण बिहार में होने वाले विप्लव की लहर से बहुत प्रभावित हुआ। इस कारण से इस क्षेत्र में होने वाली गतिविधियों का महत्व अत्यधिक है।

बनारस में विद्रोह के पूर्व मेरठ एवं दिल्ली से प्राप्त समाचारों के कारणजिला प्रशासन ने सुरक्षात्मक उपाय प्रारम्भ किए। बनारस में दिल्ली के राज परिवारों के निर्वासित व्यक्तियों की उपस्थिति सरकार विरोधी भावनाओं को प्रश्रय देने में सहायक हो रही थी। बनारस के विभिन्न अधिकारियों के मध्य विचार विमर्श के पश्चात यह निश्चित किया गया कि यदि बनारस में विद्रोह का प्रसार होता है तो सभी यूरोपीय परिवारों को एक सुरक्षित स्थान पर एकत्रत किया जाए। बनारस की सीमा पर स्थित विभिन्न जिलों के खजानों को बनारस पहुंचाया जा रहा था। उसकी सुरक्षा बनारस में विद्रोह के समय करना एक कठिन कार्य था। विभिन्न सैनिक अधिकारियों ने यह निश्चित किया कि देशी सैनिको को परेड़ स्थल पर बुलाकर उनके शस्त्रों को जब्त कर लिया जाए जिससे विद्रोह के समय वह कोई कार्यवाही न कर सकें। 5 जून को देशी सैनिको को निःशस्त्र करने हेतु परेड मैदान में सभी सैनिको को परेड हेतु बुलाने का प्रस्ताव रखा गया। यूरोपीय परिवारों को कचहरी में उपस्थित होने का भी आदेश दिया गया परन्तु इस प्रस्ताव के क्रियान्वयन के पूर्व ही देशी सैनिको ने विद्रोह कर 3 दिया। सैनिक परिषद का यह निःशस्त्रीकरण का प्रयास विफल हो गया। 37वीं देशी रेजीमेंट के सैनिको ने गोलाबरी प्रारम्भ कर दिया, जवाब में अंग्रेज तोपचियों ने तथा मद्रास के सैनिको ने इसका विरोध किया। देशी सैनिको पर गोलीबारी करते हुऐ भूल वश उन्होने सिक्ख सैनिको पर भी गोलीबारी कर दी जो कि अंग्रेजों

के साथ थे। इससे सिक्ख विद्रोहियों के साथ मिल गये। विद्रोही देशी सैनिको की स्थित कमजोर पड़ने पर वे परेड मैदान छोड़कर बाहर चले गये।

यद्यपि बनारस में विद्रोह के तत्व पहले से ही विद्यमान थे परन्तु अंग्रेजो द्वारा देशी सैनिको को निःशस्त्र करने का निर्णय इस विद्रोह का तात्कालिक कारण बना। देशी सिपाहियों को विश्वास था कि अंग्रेज अधिकारी उनको निःशस्त्र करके मौत के घाट उतार देगें। इस कारण से उन्होन प्रतिरोध का रास्ता चुना। देशी सैनिको एवं अंग्रेज अधिकारियों के मध्य अविश्वास इस विद्रोह का महत्वपूर्ण कारण बना। इस घटना के पश्चात जिला अधिकारी न यूरोपीय परिवारो तथा सरकारी सम्पत्ति और खजाने की रक्षा के उददेश्य से आवश्यक कदम उठाए गए। कर्नल नील ने यूरोपीय परिवारों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाने के उददेश्य सेएक विशेष सैनिक टुकड़ी भेजी परन्तु मार्ग में इस टुकड़ी से देशी सैनिको की भिड़त हो गयी। देशी सैनिको को लगा कि उनका दमन करने हेतु इन सैनिको को भेजा गया है। इस मुठभेड़ में देशी सैनिको की स्थिति कमजोर हो गयी। इस सघं ार्ष के दौरान जो यरूोपीय परिवार थे, वह मुठभेड़ के दौरान भाग कर सुरक्षित स्थान पर चले गये। अंग्रेज टुकड़ियों से संघर्ष के बाद अधिकांश विद्रोही सैनिक चुनार एवं राम नगर की ओर भाग गए। सामान्य जनता ने इस सघं ार्ष के दौरान न तो सरकार का विरोध किया तथा न ही विद्रोही सिपाहियों का समर्थन अन्यथा स्थिति बेहद अनियंत्रित हो सकती थी। बनारस नगर में सरकारी खजाने की सुरक्षा सिक्ख सैनिको के हाथ में थी, यद्यपि उन्हें विद्रोह के बारे में कोई सूचना प्राप्त नहीं थी।

बनारस नगर में विद्रोह के पूर्व किए गए सुरक्षात्मक उपायों के कारण विद्रोह का प्रसार तो नहीं हो सका तथा स्थिति नियंत्रण में रही परनतु ग्रामीण क्षेत्रों में हिंसा एवं अराजकता बहुत तेजी से विकसित होती जा रही थी, क्योंकि बनारस से भागे हुए सैनिको ने गांवों में जाकर जमींदारो की सम्पत्ति को लूटना प्रारम्भ कर दिया तथा सरकार के समर्थक लोगों को परेशान किया। 13 जून 4 कोमि0 टुअर ने लार्ड कैनिंग को पत्र लिखा कि 'विद्रोही सैनिको ने गांवों में व्यापक पैमाने पर जमींदारो एवं सरकार समर्थको के विरूद्ध कार्यवाही की है और उनकी सम्पत्ति का हरण कर अनेक को मृत्यु के घाट उतार दिया'' 9 जून को तत्कालीन भारत सरकार के आदेश पर फौजी कानून लागू कर दिया गया।

बनारस जिले में विद्रोह का परीक्षण करने से स्पष्ट होता है कि बनारस में विद्रोह देशी सेना के सैनिको ने प्रारम्भ किया था और परिस्थति वश सिक्खों की कुछ टुकडियों ने भी उनका साथ दिया था परन्तु विद्रोहियों का आक्रमण प्रभावशाली न था और वह पराजित हो गए। दूसरी ओर सामान्य जनता इससे अलग ही रही। इस प्रकार सैनिको को जनता की ओर से कोई सहायता या सहानुभूति प्राप्त नहीं हुयी। इस आधार पर बनारस के विद्रोह को व्यापक नहीं कहा जा सकता है। इसके विपरीत अंग्रेजो को सरदार सूरत सिंह, पण्डित गोकुल चन्द्र एवं देव नारायण सिंह जैसे जमींदारो से बहुत सहायता प्राप्त हुयी। बनारस में विद्रोह की सूचना जब जौनपुर पहुंची तो अंग्रेजी सैनिको एवं देशी सैनिको के मध्य अविश्वास की भावना बढ़ गयी परिणामस्वरूप अंग्रेज सैनिको ने उनपर गोलीबारी प्रारम्भ कर दिया जिसके कारण वहां पर विद्रोह की स्थिति प्रारम्भ हो गयी। देशी सैनिको ने लेफिटीनेंन्ट मारा को मार दिया तथा सरकारी खजाने को लूट लिया। यूरोपीय सैनिक अपमान जनक तरीके से हथियार समर्पण कर जौनपुर छोंड़कर चले गये। जौनपुर में तैनात सिक्ख सैनिको ने वहां स्थित अंग्रेजो के मकान जला डाले एवं उनकी सम्पत्ति को लूट लिया। जौनपुर से भागे हुए यूरोपीय

सैनिको ने राय हिगन लाल के यहां शरण ली। 26 जून को जौनपुर जिला के डोभी ग्राम में राजपूतों ने सरकार का स्पष्ट विरोध प्रारम्भ कर दिया। उन्होने निकटस्थ क्षेत्र के सभी संचार साधन नष्ट कर दिए। जिला प्रशासन के एक अधिकारी मि0 जोकिन्सन को एक सैनिक टुकड़ी के साथ डोभी के राजपूतों का दमन करने के लिए भेजा गया।

23 जुलाई को रज्जब अली के नेतृत्व में चार सौ विद्रोही सैनिको ने जौनपुर कोतवाली पर आक्रमण कर बन्दियोंको मुक्त करा लिया। अगस्त 1857 को जौनपुर एवं आजमगढ़ के नायब नाजिम इरादतजहां ने स्वतंत्र अवध की घोषणा की, जिसके अन्तर्गत इन क्षेत्रों के समस्त तालुकेदारो, चौधरी तथा कानूनगो की उपाधि धारण करने वाले लोगों को आदेश दिया गया कि वे उसकी आज्ञा का पालन करें और शीघ्र ही उसके दरबार में उपस्थित हो। सितम्बर माह में आजमगढ़ से कई नेपाली सैनिकों की कई टुकड़ियां जौनपुर पहुंची और सैनिक विद्रोह के दमन का प्रयास किया। इस कार्य में गगं ा शरण एवं राम हिगं न लाल ने इनको सहायता प्रदान की। 18 सितम्बर को जौनपुर–आजमगढ़ की सीमा पर विद्रोही सैनिक निकटस्थ ग्रामों के जमींदारो को सरकार के विरूद्ध कार्यवाही करने के लिये प्रेरित कर रहे थे। अक्टूबर में गुप्तचर विभाग ने सूचना दी कि मेंहदी हसन ने नेतृत्व में पांच हजार विद्रोही सैनिको एवं ब्रिटिश सैनिको के मध्य संघर्ष हुआ जिसमें अंग्रेजी पक्ष को अधिक हानि हुई। दिसम्बर के प्रथम सप्ताह में जौनपुर के उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में कुंवर सिंह की सेना की एक टुकडी की उपस्थिति के कारण अशान्ति व्याप्त हो गई। इस अशान्ति को समाप्त करने के लिये गोरखा सैनिको की एक टुकडी को इस क्षेत्र में व्यवस्था बहाल करने हेतु भेजा गया। 18 दिसम्बर को 900 विद्रोहियों की एक टुकड़ी नेकोयरी पुर में एक अंग्रेज नील उत्पादक के कारखाने को जला दिया। जौनपुर बनारस की सीमा पर कुख्यात डाकू संग्राम सिंह ने अनेक लूट पाट की घटनाओं को अंजाम दिया, जिनमें अनेक सरकार समर्थक जमींदार थे। अगस्त 1858 में जौनपुर में राजा बनारस के कर्मचारियों तथा पुलिस में गभींर प्रकृति का सघंर्ष हुआ, जिसका प्रमुख कारण राजा के कर्मचारियों पर विद्रोही होने का संदेह था।

27 सितम्बर को जौनपुर के नायब नाजिम के गांव मुबारकपुर में यूरोपीय सैनिको एवं विद्रोहियों के मध्य संघर्ष हुआ। 2 अक्टूबर को विद्रोही नेता मलिक मेंहदी बख्श से अंग्रेज सैनिक टुकड़ी की सामान्य मुठभेड़ हुई। 19 अक्टूबर को यह समाचार प्राप्त हुआ कि विद्रोही नेता हसनयाब 1500 विद्रोहियों के साथ खुदवा के निकट पड़ाव डाले हुए हैं, वह खुदवा के दीवान रणजीत सिंह को प्रभावित करना चाहते हैं।

जौनपुर की घटनाओं का विश्लेषण करने पर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इस जिले में विद्रोह का स्वरूप अधिक व्यापक था। विद्रोहियों की गतिविधियां इस क्षेत्र में अधिक फैल रही थीं और जमींदारो एवं जनता से विद्रोहियों को अधिक सहयोग प्राप्त हुआ। विद्रोहियों ने लूट पाट भी इस क्षेत्र में अधिक की और सरकार समर्थक लोगों को अधिक परेशान किया। बनारस जिलेकी तुलना में यहां का विद्रोही अधिक समय तक चला। इसका क्षेत्र अधिक विस्तृत रहा और देशी सेना के अतिरिक्त अन्य वर्गो का भी इसमें योगदान रहा।

बनारस जिले में विद्रोह का प्रभाव मिर्जापुर पर पड़ने की पूरी संभावना थी। बनारस की घटना से सबक लेते हुये मिर्जापुर में जिला प्रशासन ने पुलिस विभाग के अधिकारियों को आदेश दिया कि वह महाजनों एवं सामान्य जनता का सूचना दें कि वे अपनी जान एवं सम्पत्ति की सुरक्षा के

लिए स्वयं प्रबन्ध कर लें। विन्ध्याचल के पण्डो से अपील की गई कि वे विद्रोहियों को सशस्त्र नगर की सीमा में प्रवेश करने से रोके तथा उनको यह आश्वासन दिया गया कि उनके धर्म अथवा जाति में हस्तक्षेप करने का सरकार कोई विचार नहीं रखती है।

मई 1857 में मिर्जापुर में विद्रोह की किसी प्रकार की घटना नहीं हुई। 9 एवं 10 जून को लूट पाट एवं डकैती की कुछ घटनाएं मिर्जापुर एवं उसके आस पास के क्षेत्रों में हुई। 3 जून को कचेहरी में कैप्टन कौन्टेग्यू की देखरेख में रसद एवं अस्त्र शस्त्र रखे गए। भदोही परगना में अशान्ति की आशंका होने पर गोपीगंज एवं भदोही के थानेदारो को आदेश दिया गया कि वह क्षेत्र में यह सूचना प्रसारित करें कि यदि क्षेत्र में अशान्ति का प्रसार हो जाए तो वह एक दूसरे की सहायता करें तथा सरकारी अधिकारियों को सहयोग दें। 5 जून को बनारस में सेना की टुकड़ियों द्वारा विद्रोह करने की सूचना जब मिर्जापुर पहुंची तब जिला प्रशासन ने शहर के सभी जमींदारो को निर्देश दिया कि वे विद्रोहियों तथा अराजक तत्वों को पकड़वाने में सहयोग करें। यदि उन्होने ऐसा किया तो उनको पुरस्कृत किया जाएगा और यदि आदेश का उल्लंघन किया गया तो उन्हें दण्ड दिया जाएगा, जिसमें उनकी निजी एवं पारिवारिक सम्पत्ति को सरकार द्वारा छीन लिया जाना सम्मिलित है

14 जून को शासन को यह सूचना प्राप्त हुई कि गौरा ग्राम में बहुत से सशस्त्र व्यक्ति एकत्रित हैं तथा रात्रि में नावों तथा निकटस्थ गावों को लूटने की योजना बना रहे हैं। 15 जून को मिर्जापुर के दो महाजनों ने अपनी नावों को लूटे जाने की सूचना दी। जुलाई 1857 में वास्तविक विद्रोह का सत्रू पात हुआ। अभी तक केवल लटू पात की घटनाएं हो रही थी परन्तु अब स्थिति बदल रही थी। ज्वाइन्टि मजिस्ट्रेट मि0 डब्लू0 आर0 मूरे अपने साथियों के साथ मारे गए तथा पाली नील फैक्ट्री की सम्पत्ति को विद्रोहियों ने लूट लिया। 12 अगस्त को विद्रोहियों ने अहरौरा बाजार लूट लिया। अगले दिन कुंवर सिंह के नेतृत्व में विद्रोहियों ने राबर्टगंज की तहसील को लूटा एवं तहसील में उपलब्ध अभिलेखों में आग लगा दिया। इसी दिन 400 विद्रोहियों ने शाहगंज में लूटपाट की। 20 अगस्त को झूरी सिंह के सहयोगियों ने बिसौली ग्राम को लूट लिया। घोरावल के थानेदार ने सूचना दी कि विद्रोहियों ने थाने की सभी सम्पत्ति नष्ट कर दिया और सभी कागजात जला दिए। 29 अगस्त को कुंवर सिंह के नेतृत्व में विद्रोहियों ने घोरावल को लूटा जिसमें बहुत से चन्देल राजपूतों ने सहयोग दिया। 29 सितम्बर को विद्रोहियों द्वारा एक गांव को तथा 3 अक्टूबर को हलिया में लूट पाट किया गया। 6 नवम्बर को विद्रोहियों ने बड़ी संख्या में आकर राबर्टसगंज बाजार को लूट लिया तथा स्कूल एवं अन्य स्थानों पर आग लगा दी। 7 नवम्बर को विद्रोहियों ने घोरावल की पुलिस चौकी का सामान जला दिया। 9 जनवरी 1858 को विजयगढ़ के राजा तथा यूरोपीय सैनिकों की सम्मिलित टुकड़ी का मुठभेड़ विद्रोहियों के एक दल से हुआ, जिसमें विद्रोही पराजित हो गए। इस संघर्ष में जो व्यक्ति विद्रोहियों के दल से मारे गए उनमें चारकिसानों और 6 सिपाही थे। सिंगरौली के राजा ने जिला प्रशासन के आदेशों को मानने से इनकार कर दिया औरअपनी जनता से कहा कि राजस्व अदा न करें। इसके पश्चात मिर्जापुर में विद्रोहियों की कार्यवाहियां धीरे–धीरे समाप्त होने लगी और सरकार की सुरक्षा व्यवस्था मजबूत होती गई।

मिर्जापुर जिले में विद्रोहात्मक घटनाओं का सर्वेक्षण करने पर हमें ज्ञात होता है कि इस क्षेत्र में 1858 के विद्रोह के पूर्वार्ध में विद्रोही काफी फैला रहा और विद्रोहियों ने पुलिस चौकी एवं थानों पर भी आक्रमण किए। यूरोपियन लोगों की हत्या में ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट मूरे एवं उनके साथियों

की हत्या प्रमुख है। कुंवर सिंह की कार्यवाही से भी इस क्षेत्र में काफी अशान्ति रही। इस क्षेत्र में सामान्य तौर पर जनता सरकार के पक्ष में रही और व्यापारी वर्ग सरकार की सुरक्षा पर आश्रित रहा। किसान के विद्रोहियों का साथ देने के उदाहरण उपलब्ध हैं परन्तु उनकी काफी कम है। 1858 में विद्रोही धीरे–धीरे घटता गया और सरकार का नियंत्रण अपेक्षाकृत बढ़ गया।

बनारस मण्डल के अन्य जिलों की अपेक्षा गाजीपुर में विद्रोह की संभावना काफी कम थी। परन्तु आजमगढ़ में विद्रोह होने से कुछ समय के लिए यहां की स्थिति में परिवर्तन हो गया। 6 जून को शहर में गृह युद्ध की सी स्थिति उत्पन्न हो गई, जब कि विद्रोहियों ने काफी लूट पाट की। प्रशासकीय अधिकारियों ने सरकारी खजाना तत्काल बनारस भेज दिया तथा शहर में सकट काल में फौजी शासन की घोषणा कर दी। 21 जून को चौरा ग्रामवासियों ने मि0 मैथ्यू की फैक्ट्री में आग लगा दिया और सामान लूट लिया। इस घटना से यूरोपियन लोगों में क्षोभ उत्पन्न हुआ और प्रतिशोध के लिए एक सैनिक टुकडी को वहां भेजा गया। जिसने विद्रोहियों की सम्पत्ति को लूट लिया। इस वर्ष गाजीपुर जिलें में यही प्रमुख घटनाएं हुई किन्तु विद्रोही प्रकृति के जमींदारो और अन्य लोगों ने निकटस्थ जिलों के विद्रोहियों से सम्पर्क बनाए रखा। सन 1858 में जब अन्य क्षेत्रो में सिथति सामान्य होने लगी तो गाजीपुर में अशान्ति व्याप्त होने लगी।

अप्रैल 1858 में कुंवर सिंह ने सिकन्दरपुर ग्राम में स्थित नील फैक्ट्री और थाना जला दिया। वहां के आस पास के गांवो ने उनका पूरा सहयोग किया। 21 अप्रैल को कुंवर सिंह ने खेती एवं बरिया के थाने को जला दिया और खेती के थानेदार को जला दिया। मनिहाल नामक स्थान पर कुंवर सिंह और अंग्रेजी सेनाओं में सघं ार्ष हुआ किन्तु उसमें विद्रोहियों को अधिक क्षति हुई। यहां के ग्राम वासियों की सहायता उन्हें प्राप्त हुई। 3 जून को गहमर स्थित नील फैक्ट्री पर आक्रमण किया और वहां पर आग लगा दिया। 05 जून को बुधौरा नील कारखाने पर आक्रमण किया गया तथा नियाजपुर और राजपुर में लूटपाट की गई। चौसा नामक स्थान पर भी लूटपाट की घटनाएं हुई। 7 जून को चौसा थाने पर तथा तहसील पर मेघर राय तथा अन्य विद्रोहियों ने आक्रमण किया। 8 जून को यूरोपियन सैनिको तथा विद्रोहियों के बीच सघं ार्ष हुआ। पहले विद्रोही जगंल में चले गए, पर फिर वापस आ गए और गहमर ग्राम पर अधिकार कर लिया। आस पास के ग्राम वासियों ने विद्रोहियों का साथ दिया। विद्रोहियों ने सरकारी सम्पत्ति को लूटा और क्षति पहुंचाई।

बलिया, रसड़ा तथा जमनिया में विद्रोही सैनिको ने आतन्क मचाया। 13 जून तक गाजीपुर की अधिकांश तहसीलों तथा थानो पर विद्रोहियों ने आक्रमण कर क्षतिग्रस्त कर दिया। 13 जुलाई को बलिया में अंग्रेजी सेना एवं विद्रोहियों के मध्य संघर्ष हुआ और दोनो को क्षति हुई। इसके पश्चात धीरे–धीरे अंग्रेजी सेना के कारण स्थिति सुधरने लगी और कुछ छिटपुट घटनाओं की सूचना कभी कभी प्राप्त होती थी। अक्टूबर 1858 तक गाजीपुर में प्रायः शान्ति स्थापित हो गई।

गाजीपुर में विद्रोह की घटनाओं के परीक्षण से हमें ज्ञात होता है कि 1857 में इस जिले में विशेष आन्दोलन नहीं हुआ परनतु 1858 में कुंवर सिंह को गाजीपुर में काफी सफलता मिली और वहों के स्थानीय लोगों की सहानुभूति एवं सहायता प्राप्त हुई। अन्य विद्रोहियों को भी 1858 में जून एवं जुलाई के महीने में अधिक सफलता प्राप्त हुई। ग्रामीण जनता द्वारा विद्रोहियों को दी गयी सहायता इस जिले के आन्दोलन का महत्वपूर्ण अंग रहा। इस प्रकार की सहायता अन्य क्षेत्रों में बहुत कम प्राप्त हुई। अक्टूबर 1858 तक विद्रोह

पर सरकार ने काफी नियंत्रण स्थापित कर लिया था।

बनारस मण्डल में 1857 के विद्रोह के अन्तर्गत जो घटनाएं घटित हुई वे इस मण्डल के सभी जिलों में एक समान न थीं। मिर्जापुर एवं बनारस जिलों में विद्रोहियों को जनता का सहयोग जौनपुर एवं गाजीपुर की अपेक्षा कम मिला। क्षेत्रीय राजपूतों की सक्रियता तथा सुयोग्य विद्रोही नेताओं के कारण जौनपुर में विद्रोह को व्यापक स्वरूप प्राप्त हुआ। गाजीपुर तथा मिर्जापुर में विद्रोही नेताओं को बिहार के प्रसिद्ध विद्रोही नेता कुंवर सिंह की उपस्थिति में पर्याप्त बल मिला। प्रारम्भ में इन जिलों में विद्रोह के व्यापक होने की संभावना प्रतीत हुई किन्तु जिला प्रशासन अधिकारियों की सुरक्षात्मक कार्यवाहियों एवं दमन नीति के कारण विद्रोही उग्र रूप धारण न कर सका।

इस मण्डल की जनता ने यद्यपि छिटपुट रूप से विद्रोहियों की सहायता की परन्तु अनेक स्थानों पर विद्रोहियों द्वारा गांव में की गई आम लूटपाट से जनता विद्रोहियों के प्रति ससंकित हो गई और संभवतः इसी लिए विद्रोहियों को यथेष्ट रूप से जनता से सहयोग न मिल सका। जनता द्वारा सरकार को सहयोग दिए जाने के भी अनेक उदाहरण मिलते हैं। विद्रोहियों को जनता द्वारा दी गई सहायता इतनी पर्याप्त नहीं थी कि सरकार से मुकाबला करने में उन्हें बल प्राप्त होता। इसके अतिरिक्त जनता ने मिर्जापर के अलावा कहीं भी सरकार का स्पष्ट विरोध नहीं किया। मण्डल के विभिन्न भागों में सरकारी सम्पत्ति तथा नाव लूटने की अनेक घटनायं घटित हुई, जो इस बात का परिचायक थीं कि जन सामान्य में सरकार विरोधी भावनाएं व्याप्त थीं परन्तु कुशल नेतृत्व एवं पर्याप्त शक्ति के अभाव में जनता सामूहिक रूप से संगठित न हो सकी। इस क्षेत्र के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों तथा जमींदारो ने व्यक्तिगत कारण वश भी सरकार का विरोध किया।

बनारस मण्डल में विद्रोह के स्वरूप पर दृष्टिगत करने से स्पष्ट होता है इस क्षेत्र के विद्रोह को जन विद्रोह या राष्ट्रीय विद्रोह की संज्ञा नहीं दी जा सकती परन्तु इस सत्य को भी अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि इस क्षेत्र के विद्रोह के स्वभाव में जन विद्रोह एवं राष्ट्रीय विद्रोह के लक्षण न्यूनाधिक रूप में विद्यमान थे। बनारस मण्डल का विद्रोह मुख्यतः सरकारी नियमों से त्रस्त जनता तथा जमींदारो द्वारा सरकार के विरोध में किया गया असंठित प्रयास था। यदि विद्रोहियों में एकता एवं संगठन का सहयोग प्राप्त हुआ होता तो निश्चत ही इस मण्डल में विद्रोह को स्वरूप अपेक्षाकृत अधिक व्यापक होता।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- 1– एलन, सी0 : अ फ्यू वर्ड्स एबाउट दी रेड पम्पलेट (लंदन 1858)
- 2– अरनाल्ड, एडविन : दी मारविसस ऑफ डलहौजी एडमिनिस्ट्रेशन
- ऑफ ब्रिटिश इंडिया, भाग–2 (लंदन 1865)
- 3– अल्टेकर, ए0 एस0 : हिस्ट्री ऑफ बनारस (बनारस 1937)
- 4– ऐनेस्टे, वीरा : दी इकोनोमिक डेवलपमैन्ट ऑफ इंडिया (लंदन
- 1939)
- 5– चौधरी, के0एन0 : इकोनोमिक डेवलपमैन्ट ऑफ इंडिया अंडर दी
- ईस्ट इंडिया कंपनी (कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस 1971)

- 6– चन्द्रा, विपिन : दी सिपाय म्यूटनी 1857 (कलकत्ता 1957)
- 7– चन्द्र, तारा : भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, भाग 1–2
- (दिल्ली 1965)
- 8– कैम्पवेल, सर सी0 : भारतीय विद्रोह का वृतान्त
- 9– हबीब इरफान : एग्रेरियन सिस्टम ऑफ मुगल इंडिया (संस्करण
- 1963 दिल्ली)
- 10– होम्स, टी0आर0 : दी हिस्ट्री ऑफ दी इंडियन म्यूटनी (लंदन 1904)
- 11– डेवर, डगलस : ए हैन्डबुक टू दी इंग्लिश प्री म्यूटनी रिकार्ड
- (इलाहाबाद 1919)
- 12– इरिक स्टोक्स : दी पीजेन्ट एंड दी राज (कैम्ब्रिज 1978)
- 13– सर सैयद अहमद खान : असबाबे सरकसी–ए–हिन्दुस्तान (आगरा
- 1859)
- 14– मिर्जा गालिब : 'चरागे बैर' (दिल्ली 1856)
- 15– जनरल– 'हंस काशी अंक' (हंस प्रकाशन), 10 सितम्बर 1852
- 16– बनारस जौनपुर, गाजीपुर व मिर्जापुर डिस्ट्रिक्ट गटेटियर

Copyright © 2017 *Shweta Srivastava*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.